परमपिता परमात्मा – शिवरात्रि

शिवरात्रि का त्यौहार सभी ध्र्मों का त्यौहार है। हम सभी भारतवासी हर वर्ष शिवरात्रि का पर्व बहुत श्र(ा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। रात्री जागरण, व्रत, उपवास रख परमात्मा शिव की उपासना करते हैं। सभी ध्र्मपरायण लोगों के लिए भारतवर्ष एक तीर्थ है। अपनी–अपनी मान्यताओं के अनुसार भिन्न–भिन्न विचार परमात्मा के स्वरूप को लेकर चले आऐं हैं जबकि परमात्मा एक है और सभी ध्र्मों को एक सूत्रा में बाध्ंता है। रामेश्वरम में राम, वृंदावन में गोपेश्वर कृष्ण कन्हैया तथा एलीपफेंटा में त्रिामूर्ति के चित्राों से यह स्पष्ट है कि सबके परमपिता शिव हैं। यदि सभी परमात्मा के इस स्वरूप को पहचान लेते तो विश्व का इतिहास ही कुछ और होता। तब साम्प्रदायिक दंगे, धर्मिक मतभेद, रंगभेद व जातिभेद नहीं होते। सभी लोग ईश्वरीय मुख होते व कल्याण के भागी होते। यह विचार करने की बात है कि जब बच्चे का जन्म रात्रि के १२ बजे होता है तो वह जन्मदिवस कहा जाता है चूंकि परमात्मा शिव ने जन्म नहीं लिया, ज्योर्तिबिन्दु शिव पफाल्गुनी मास की कृष्ण पक्ष की चर्तुदशी तिथि को घोर अंध्कार में रात्रि में अवतरित होते हैं। पफाल्गुनी मास वर्ष का अतिंम मास होता है। इस कारण कल्प के अंतिम युग अर्थात कल्युग का प्रतीक होता है व कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि कलयुग के अंतिम चरण की सूचक होती है व अर्ध्रात्रि का समय तमोप्रधन का द्योतक होता है। अत: परमात्मा शिव का अवतरण दिवस किसी तिथि से युक्त ना होकर शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। सभी देवी देवताओं के आकर्षक चित्रा होते है, मूर्तियां होती हैं, परन्तु परमपिता परमात्मा शिव को शिवलिंग अर्थात् स्मरण स्मारक चिह्न के रूप में ही पूजते हैं। हममे से अनेक लोगों को प्रभु के अलौकिक स्वरूप व गुणों का बोध् नहीं है। इसलिए स्वभावतया जिज्ञासा होती है कि **शिव कौन हैं?** शिव अर्थात् विश्व की सर्वआत्माओं के परमपिता कल्याण कारी, बीजस्वरूप, ज्योतिर्बिंदु समस्त स्रष्टि के उद्धरक, सदगतिदाता, पालनहार शिव को हम सदाशिव, स्वंयभू व शंभूनाथ के नाम से भी पुकारते हैं। परमात्मा शिव का कोई आकार नहीं, वे निराकार हैं, बिन्दु स्वरूप हैं। वे इस सृष्टि के रचयिता हैं वे हमारे सद्गुरू भी हैं, इसलिए वे हमारे परमपिता हैं।

शिवलिंग को हम क्यों पूजते हैं? शिवलिंग परमात्मा का स्मारक चिह्न हैं, स्मृति चिंह्न हैं। लिंग का अर्थ 'प्रतिमा' है। भारत में सबसे अध्कि पूजा परमपिता परमात्मा के स्मारक चिह्न शिवलिंग की होती है। जैसा कि कहा जाता है कि परमात्मा शिव स्वंय निराकार हैं, और सारे मण्डल में व्यापक हैं, शिवलिंग केवल उनका प्रतीक है। सभी आत्माएँ सूक्ष्मातिसूक्ष्म, ज्योतिस्वरूप, अणुरूप अथवा बिन्दुरूप हैं। और शिव उन सभी में से परम अर्थात् सर्वश्रेष्ठ हैं, परन्तु वे भी ज्योति बिन्दुरूप हैं। बिन्दु चूंकि मण्डलाकार तो होता ही है, बिन्दु अर्थात शून्य को मण्डलाकार रूप में ही अंकित किया जाता है। कदाचित बिन्दु रूप में कोई प्रतिमा तो बन नहीं सकती। अत: स्मरण के लिए परमात्मा की प्रतिमा एक मण्डल के रूप में बनाई जाती है, जिसे हम सभी शिवलिंग कहते हैं। शास्त्रों में, उपनिषदों में आत्मा को अंगुष्ठाकार अर्थात् अंगुष्ठा मांत्रा अमलं दीप्यमानम समन्तत: शु(दीपशिखाकरं पूर्ण मण्डितम इन्दुरेखा समाकारम तारूपमथापि वा निवारशूक सदृशम बिसि सूत्राभमेव वा ;कठोपनिष्दद्ध। बिन्दुरूप होने के कारण ही शिवलिंग को अंगुष्ठाकार व मण्डलाकार बनाया जाता है। शिव पुराण में यह विध्ि विधन बताया गया है कि आत्मा और परमात्मा को अगुंष्ठाकार मानने के कारण ही पूजा की सुविध के लिए बनाए गए शिवलिंग का रूप अंगुष्ठाकार तथा अंगुष्ठ परिमाण से ही गुणित कोई माप होता है। शिव का बिन्दुरूप होने के कारण ही 'शिव' शब्द भी बिन्दु का पर्यायवाची बन गया है। कई प्रांतो में लोग शून्य को शिव ही कहते हैं। मोहनजोदड़ो सभ्यता के लोग शिव के उपासक

थे। वे लोग भी परमात्मा शिव को बिन्दु रूप ही मानते थे।
भारत में शिव के १२ अति प्रसि(मठों को ज्योर्तिलिंगम कहा जाता है। इनमें हिमालय में स्थित केदारनाथ, मालवा में विश्वेश्वर, सौराष्ट्र में सोमनाथ, कश्मीर में अमरनाथ व मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकालेश्वर अति प्रसि(मठ हैं। शिवलिंग के साथ ही उसी रूप में अनेक छोटी–छोटी प्रतिमाएं स्थापित हैं, जिन्हे 'शालिग्राम' कहते हैं। जिस प्रकार शिवलिंग परमात्मा शिव का स्मारक व स्मरणचिंन्ह हैं उसी प्रकार शालिग्राम आत्माओं का प्रतिक चिह्नं है व हम सभी इनकी श्र(ा व भक्ति से पूजा करते हैं।

परमात्मा शिवलिंग के अन्य नाम हैं:– त्रिाभुवनेश्वर अर्थात् साकार–आकार व निराकार तीनों लोकों के स्वामी, त्रिामूर्ति ;त्रिादेवद्ध अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु व शंकर के भी रचयिता, मुक्तेश्वर अर्थात सर्वकष्टों के निवारक, त्रिालोकीनाथ अर्थात् तीनों लोकों के स्वामी, त्रिाकालदर्शी अर्थात सृष्टिरूपी रंगमंच के आदि मध्य व अंत के ज्ञाता, विश्वेश्वर अर्थात सारे संसार के स्वामी, सर्वेश्वर अर्थात सर्वआत्माओं के ईश्वर परमपिता शिव। हम शिव की ओम नमः शिवाय, हर–हर महादेव व शिव परमात्माएं नमः के उच्चारण से भी पूजा करते है।

<u>रात्री और कलयुग से क्या तात्पर्य है?</u> ऐसा समय जो कलयुग का अंतिम चरण होता है कलयुग और रात्री में दोनों समानार्थक हैं अर्थात् समान अर्थ में ही प्रयुक्त होते है। 'कलयुग' का प्रयोग पापाचार, हिंसा, अत्याचार, अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार, छलकपट जैसे कुकृत्यों के लिए होता है। आज विश्वभर में हिंसा, आंतक, लूट–खसोट, अश्लीलता, यौनाचार, अत्याचार, अन्याय, भ्रष्टाचार के साथ ही आदमी हैवान होने लगा है। निठारी कांड ने सारे पृथ्वी लोक को ही कंपा दिया है। जहां मालिक और सेवक दोनों ही मनुष्य से पिशाच बनकर मासूम, अबोध बच्चो व युवतियों के साथ घृणित कार्य कर उनकी हत्या ही नहीं की बल्कि उनके शरीर के टुकड़े कर उनके मांस को भी खा गए। उन्होने कलयुग की सारी हदों को पार कर कलयुग को कंलकित कर ऐसी गाथा लिख दी जिसे कोई सदियों तक नहीं भुला पाएगा। यह कालरात्रि है सूनामी, भूंकप, तूपफान, चक्रवात, विनाश इस कलयुग का अंत ही है। अतः रात्रि और कलयुग इन दोनों के इस प्रकार के प्रचलित प्रयोग से स्पष्ट है कि कलयुग की अंतिम बेला में युग प्रवर्तक ज्योति बिंदु परमपिता परमात्मा के अवतरण को ही शिवरात्रि कहा गया है। कलयुग के अंत में ही शिव जन–जन के दुःख हरकर सुख देते हैं अर्थात् सतयुग की स्थापना करते हैं। गीता में भी लिखा है कि जब–जब ध्र्म की ग्लानि होती है, तब–तब मैं ध्र्म की रक्षा के लिए इस ध्रती पर आता हूं। सज्जन लोगों की रक्षा के लिए, अज्ञानियों को ज्ञान देनें, दुष्ट आत्माओं को पावन बनाने व ध्र्म की रक्षा के लिए हर युग में आता हूं। रात्रि के भी मध्य काल में १२ बजे 'शिव उत्सव' मनाना यही सि(करता है कि अर्ध्म की पराकाष्ठा के काल अर्थात कलयुग के अंतिम चरण में ज्योतिबिन्दु परमेश्वर परमपिता शिव का अवतरण होता है। अवतरण का दिन किसी तिथि के साथ युक्त ना होकर ''शिवरात्रि'' नाम से ही जाना जाता है। परन्तु कलयुग के अंत समय को सूचित करने के लिए यह पफाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अंध्कारमय रात्रि में ही मनाया जाता है।

परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। हम सभी एक–एक दिन पुराने होते जा रहे हैं। पहले नन्हे बच्चे थे पिफर थोड़े बड़े हुए और युवा हुए, पिफर बूढ़े हुए। हर दिन परिवर्तन चलता रहा। पहले सतयुग था, देवी–देवता लक्ष्मी नारायण झूले, पुष्पों से महकते बाग–बगीचे, केसर से महकती बयारी और स्वादिष्ट

रसीले पफलों से लदे तरूवर! सबके ईश्वरीय मुख पर अलौकिक तेज, दिव्यवाणी, और सदाचारी। पिफर त्रोतायुग आया, द्वापर युग आया और अब कलयुग है। आज हम उन परिस्थितियों से गुजर रहे है जब ध र्मसत्ता व राज्यसत्ता दोनों ही शक्तिहीन हो गयी है। आज हर आत्मा की यही आवाज है कि शीघ्र ही परिवर्तन होना चाहिए। मानव दुख को सुख में, अशांति को शांति में व अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तित कर सभी पवित्रता, सुख, शान्तिमय जीवन जीना चाहते हैं। सर्वआत्माओं की मनोकामनाओं को पूरा करने वाला एक वही परमपिता परमात्मा शिव है जिसके अवतरण की स्मृति में हम ''शिवरात्रि'' मनाते हैं।

महाभारत में भी लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंध्कार से आच्छादित थी तब एक अण्डकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योर्तिलिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना।

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि ''सृष्टि के आरंभ मे हजारों सूर्यो के समान तेजस्वी अलौकिक आलोक से प्रखर एक अण्ड प्रकट हुआ''। भारत के ध्र्मग्रंथों में ही नहीं अपितु मुसलमानों की धर्मिक पुस्तक 'तोरेत' में आरम्भ इस प्रकार होता है कि 'सृष्टि संरचना की प्रक्रिया में सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर प्रकट होती थी।' भारत से बाहर विश्व की प्रमुख संस्कृतियों पर शिव की ही झलक है जैसे नेपाल में पशुपतिनाथ, बेबीलोन, मिश्र, यूनान और चीन में शिव की मान्यता अलग अलग नामों से थी। 'बेबीलोन में 'शिउन', मिश्र मे 'सेवा' व रोम में 'प्रियप्स' नाम से पूजा करते हैं। इटली के गिरिजाघरों में आज भी शिव की प्रतिमा पाई जाती है। चीन में शिव को 'हुवेड हिफ्रहु' व यूनान में 'पफल्लुस' पूर्वी अमेरिका में 'शिवु' कहते हैं। काबा कभी शिवालय था। इससे सि(होता है कि परमपिता, परमात्मा शिव ने जन जन के कल्याणकारी परिवर्तन के लिए ऐसा विशेष कार्य किया कि भगवान शिव की विश्वव्यापी मान्यता है।

भारत में तीन रात्रियों को विशेष महत्व है:— शिवरात्रि, नवरात्रि एंव दीपावली। शिवरात्रि परमात्मा शिव के अवतरण की स्मृति में मनाते हैं। नवरात्रि में नौ देवी शक्तियों की पूजा होती है। दीपावली में लक्ष्मीजी की पूजा करते हैं। लक्ष्मी से ध्न मांगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी हैं उनसे बु(का वरदान मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति मांगते है। आसुरी प्रवृतियों का संहार करने के लिए हमें शक्ति की आवश्यकता है। वास्तव में ये शक्तियां शिव की संतान थीं जो 'शिव शक्तियां' अथवा 'ब्रह्मा पुत्रियां' कहलाती हैं। हर वर्ष नवरात्रि में हम कन्याओं की पूजा करते हैं। 'कलश' की स्थापना की जाती है। उनके द्वारा जगाये जाने की स्मृति में जागरण करते हैं, अंखड दीप जलाते हैं। ध्र्म ग्लानी के समय नर नारियों की जो दिव्यता थी वह धीरे—धीरे मलिन हो रही थी तब परमात्मा शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञानयोग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही इनका तीसरा नेत्रा था और अर्न्तमुखता, सहनशीलता, पवित्राता आदि दिव्यगुण ही उनकी अष्ट भुजाएं थी। इन्ही गुणों के कारण ही वे 'आदि शक्ति' अथवा 'शिव शक्ति' कहलाईं। इन्ही शक्तियों ने आसुरी शक्तियों का नाश किया। इन कन्याओं के महान कर्तव्यों के कारण ही हम हर वर्ष कन्या पूजन करते हैं और सरस्वती, अम्बा, दुर्गा मां से प्रार्थना करते हैं कि हे भवानी, हे मां मेरी ज्योति जगा दो और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मेरे अन्तरमन का अन्ध्कार मिट जाये।

<u>शिवरात्रि पर्व पर हमारा संकल्प</u> : शिवरात्रि पर्व सभी लोगों को सम्मिलित पर्व के रूप में मनाना चाहिए। अपने आत्म स्वरूप को पहचानना व मूल गुणों को धरण करना चाहिए। इस महापर्व का संदेश सारे मानव समाज के लिए है कि हम दृढ़ संकल्प लें कि हम देहाभिमान त्यागकर आत्मस्थिति में स्थित होकर

आत्मा के मूल गुणों को धरण कर अपने जीवन के व्यवहार में लाएंगें। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपना सारा जीवन अपने इस महान ईश्वरीय व मानवीय सेवा को अर्पित कर संसार के कल्याण अर्थात् शिव द्वारा चलाये हुए आध्यात्कि क्रांति को सपफल बनाने में समर्पित कर दिया। पूज्य दादियां व ब्रह्मा भाई व बहने बाबा की वे शक्तियां हैं जिन्होंने आत्मा से जग को प्रकाशमान कर ज्ञान, स्नेह, सकंल्प, संबध, सम्पर्क, शक्ति का अखंड दीप प्रज्जवलित कर दिया। परमपिता ज्योतिबिन्दु शिव ने बाबा की सरलता, बच्चों के लिए प्रगाढ़ प्रेम देख बाबा के ह्रदय में प्रवेश किया व उनके द्वारा ही इस ध्रती पर स्वर्ग बनाने के लिए अलख जगा दी। शिवरात्री पर हम सभी यह दृढ़ संकल्प लेने की प्रतिज्ञा करें कि अपना सारा जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर सुख शांति का रसास्वादन करेंगें।

ओम शांति!
उषा शर्मा

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com